डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 6-08-2020

विषय- वैदिक साहित्य

ऋग्वेद में दान-स्तुतियाँ

अनेक विषयों के साथ ही ऋग्वेद में कुछ सूक्त दान-स्तुतिपरक भी है । ऋग्वेद में, कितने सूक्तो में दान- स्तुतियाँ है इस विषय में विद्वानों में मतभेद है । 'ऋक् सर्वानुषक्रमणी' में 'कात्यायन' ने ऐसे सूक्तों की संख्या केवल 22 बतलायी है । जर्मन विद्वान् 'विण्टरनिट्ज' के अनुसार 40 सूक्तों में दान- स्तुतियाँ है । इसके साथ ही कुछ ऐसे भी विद्वान् है जो ऋग्वेद के 68 सूक्तों में दान-स्तुतियों का होना स्वीकार करते हैं।

इन सूक्तों का विषय न तो बहुत अधिक धार्मिक है न बहुत धर्म रहित ही है । इनकी संख्या की भांति ही, इनके स्वरूप के विषय में भी सभी विद्वानों में मतैक्य नहीं है। वेदों में इतिहास की मान्यता वाले आधुनिक विद्वानों के अनुसार ये दोन- स्तुतियां ऐसे ऋषियों की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करती है, जो अपने दानदाताओं की दानशीलता से अत्यधिक प्रसन्न हुए थे। इसके विपरीत वेदों को अपौरुषेय मानने वाले, भारतीय विद्वानों का विचार है कि ये दान-स्तुतियाँ किसी व्यक्ति विशेष से संबंध नहीं रखती है । इनके अनुसार वेद में किसी ऐतिहासिक घटना का उल्लेख असंभव ही है ।

वस्तुत: इन सूक्तों में वैदिक कवि, अपने यजमान राजा की या अपने आश्रयदाता की दानशीलता की या पराक्रम की प्रशंसा करता है। शत्रु पर विजय प्राप्त करने के पराक्रम की स्तुति के कारण इन सूक्तों को विजय सूक्त भी कहा जाता है।

इन दान-स्तुतियों में से अधिकांश यज्ञीय-मंत्रों के ही रूप में है। इनमें पहले इंद्र की स्तुति है और बाद में दान दक्षिणा देने वाले राजा की स्तुति है । प्रथम मंडल का 126वां श्लोक पूरा का पूरा दानस्तुति के ही रूप में है।

ऋग्वेद में आयी, अभ्यावर्ती चाय मान (6/ 27/8), पाकस्थामा कोरायण(8/3/2 1/24) प्रकण्व(8/55 और 8/56) सावर्णि (10/62 /8/11) आदि की दान स्तुतियों पर विचार करने के उपरांत श्री बलदेव उपाध्याय इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि इन सूक्तों में किसी विशिष्ट राजा आदि की स्तुति नहीं है अपितु, इनमें सामान्य राजाओं आदि का ही संकेत है। इनमें आये राजा आदि के नाम, व्यक्ति एवं इतिहास का केवल आभास ही देते हैं, वस्तुत: वे वैसे नहीं है। पाठकों के ज्ञान के लिए ऋग्वेद में, दशम मंडल में, 117 वें सूक्त में आयी एक दान-स्तुति का परिचय दिया जाता है। यह दान-स्तुति एक सामान्य दान-स्तुति है। इसमें दान की महिमा के ओजस्वी वर्णन के साथ ही साथ नैतिक

भावना का भी समावेश मिलता है । इस सूक्त की छठी ऋचा में कहा गया है कि जो व्यक्ति अपने धर्म को दान में नहीं देता है और उसका उपयोग केवल अपने लिए ही करता है, वह पाप का ही भागी बनता है-

"मोघमन्नं विदन्ते अप्रचेता: सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य ।

नार्यमार्ण पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी।।

"इसी प्रकार एक अन्य ऋचा में कहा गया है कि जो अपने अत्यधिक स्नेही सखा को भी दान नहीं देता है, उसे मित्र नहीं मानना चाहिए। ऐसे व्यक्ति से दूर ही रहना अच्छा होता है। ऐसे व्यक्ति के घर न जा कर दूसरे ऐसे व्यक्ति की शरण में जाना अच्छा है जो पोषण करने वाला है-

"न स सखा यो न ददाति सख्ये सचाभुवे सचमानाय । अपास्मात् प्रेयान् न तदोको अस्ति पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत्।। (ऋग्वेद 10/117/4//)

इस प्रकार संक्षेप में ऋग्वेद में दानस्तुतियों में आये उपर्युक्त नीति वाक्य यद्यपि ऋग्वेद के लिए एक विलक्षण बात है, तथापि ऋग्वेद में इनका अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इससे हम लोगों को दान के महत्व की शिक्षा प्राप्त होती है। यह कहा जा सकता है कि शुरू से ही दान देने की परंपरा रही है और इसे हम लोगों को स्वीकार करना चाहिए और यथासंभव हो सके तो दान करना चाहिए। दान जरूरतमंदों को देना चाहिए।